विचार बिन्दु

चरित्र के बिना ज्ञान बुराई की ताकत बन जाता है। जैसे कि दुनिया के कितने ही चालाक चोरों और भले मानुष बदमाशों के उदाहरण से स्पष्ट है।

–महात्मा गाँधी

एक दिलचस्प अध्ययन यह भी

अपनी कुण्डलियों (एक प्रकार का छंद) के लिए विख्यात गिरिधर कविराय ने लिखा था: बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय।/ काम बिगारै आपनो, जग में होत हंसाय। उनकी इस बात से शायद ही कोई असहमत हो। लेकिन इधर हाल में आई एक रिपोर्ट में जो कहा गया है उसे इसी सहजता से शायद ही कोई स्वीकार करे। मैं बात कर रहा हूं सेण्टर फ्रेश और यूगव द्वारा हाल में करवाए गए एक राष्ट्रव्यापी अध्ययन की रिपोर्ट की। देश के पहले, दूसरे और तीसरे टाइअर (स्तर) के शहरों-कस्बों में रह रहे विद्यार्थियों, कामकाजी पेशेवरों और स्व-नियोजित लोगों से पूछे गए सवालों के आधार पर किया गया यह अध्ययन तकनीक, सामाजिक अपेक्षाओं और सतत संलग्नता की वजह से बहुत अधिक जटिल बना दी गई आधुनिक ज़िंदगी की अनेक विचित्रताओं को उजागर करता है। इस अध्ययन में इन लोगों के जीवन के चार मुख्य पक्षों की पड़ताल की गई थी। ये चार पक्ष हैं: भोजन और जीवन शैली विषयक आदतें, डिजिटल और सामाजिक जीवन, डेटिंग और रिश्ते, और कैरियर एवं प्रोफ़ेशनल ज़िंदगी इन चार मुख्य क्षेत्रों के बारे में पूछे गए सवालों के जवाबों के आधार पर तैयार की गई रिपोर्ट हाल में ज़ारी हुई है और उसका शीर्षक है:– 'सेण्टर फ्रेश इण्डिया ओवर थिंकिंग'। जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, यह रिपोर्ट सोचने अर्थात थिंकिंग से आगे बढ़कर ओवरथिंकिंग – अधिक सोचने की बात कर रही है। इस रिपोर्ट के अनुसार ओवर थिंकिंग अब आम भारतीय के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है और न केवल किसी गम्भीर समस्या या संकट के समय, अपितु रोज़मर्रा के जीवन के सामान्य घटना क्रम के समय भी वे ओवर थिंकिंग करते हैं। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि लगभग 81 प्रतिशत भारतीय हर रोज़ करीब तीन घण्टे ओवर थिंकिंग में लगाते हैं। इस सर्वेक्षण का आकार हालांकि बहुत बड़ा नहीं था, महज़ 2100 लोगों के उत्तरों के आधार पर यह सर्वेक्षण किया गया था, इसलिए इसे बहुत ज़्यादा विश्वसनीय भले ही न माना जा सके, इसके नतीज़े हमें काफी कुछ सोचने को विवश करते हैं।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि आज के हाइपर कनेक्टेड दौर में ज़रूरत से ज़्यादा सोचना हमारी आदत का हिस्सा बन चुका है। ध्यान रखा जाए कि सोचना ग़लत नहीं है, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा सोचना, उन चीज़ों के बारे में सोचना जो निहायत ही ग़ैर ज़रूरी हैं, बुरा है। रिपोर्ट एक बहुत मानीखेज़ बात कहती है, कि हम भारतीय किसी रेस्तरां में जाकर मेन्यू देखते हुए खाने का ऑर्डर देने में जितना सोचते हैं उतना तो हम किसी राजनीतिक दल या नेता को वोट देते समय भी नहीं सोचते हैं, जबकि हमारा यह कृत्य हमारी भावी ज़िंदगी को बहुत ज़्यादा प्रभावित करने वाला होता है। इस अध्ययन में उत्तर भारत के 63 प्रतिशत और दक्षिण भारत के 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके लिए किसी जन प्रतिनिधि का चुनाव करने से कहीं ज़्यादा तनावपूर्ण होता है किसी रेस्तरां में एक डिश का चुनाव करना। इसी तरह 1997 से 2012 के बीच जन्मे लोगों (जिन्हें आम बोलचाल में जेनज़ेड कहा जाता है) और महिलाओं के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कोई स्टोरी पोस्ट करना बहुत ज़्यादा सोच-विचार करने का मामला होता है। इकसठ प्रतिशत भारतीयों ने बताया कि वे सोशल मीडिया पर कोई फोटो या वीडियो साझा करने से पहले कम से कम पांच घंटा उस पर विचार करते हैं। और ऐसा ही वे लोग वहां कोई गाना साझा करते हुए, अपनी तस्वीर में किसी फिल्टर का प्रयोग करते हुए भी करते हैं। लगभग साठ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जब वे सोशल मीडिया पर अपने दोस्तों-परिचितों की कोई स्टोरी या प्रतिक्रिया देखते हैं तो उस पर तुरंत कोई टिप्पणी करने की बजाय काफी समय तक उस पर गहन चिंतन करते हैं ताकि कोई उनके बारे में यह धारणा न बना ले कि वे टिप्पणी करने या प्रतिक्रिया देने के लिए मरे जा रहे हैं। यहां मिलेनियल्स ने अर्थात उन्होंने जिनका जन्म 1981 से 1996 के बीच हुआ है बताया कि सोशल मीडिया पर दूसरों की टिप्पणियां वगैरह देखते हुए वे ऐसा दर्शाते हैं जैसे उसमें उनकी कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं है। इस जवाब से समझा जा सकता है कि आज के समय में सोशल मीडिया ने हमें कितना आत्म सजग बना दिया है। इस अध्ययन से बाहर भी हममें से जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं वे इस बात का अनुभव करते हैं कि बहुत सारे लोग हमारी पोस्ट देखते या पढ़ते तो हैं लेकिन वे उस पर कोई प्रतिक्रिया न देने के बारे में अत्यधिक सजग रहते हैं। प्रतिक्रिया देना तो दूर की बात है, वे ऐसा प्रदर्शित करते हैं जैसे उन्होंने हमारी पोस्ट देखी ही नहीं है, जबकि असल में वे उसे देख चुके होते हैं। इस बात की पुष्टि अनेक प्रकार से हो जाती है। जैसे अगर आप उनके बारे में कोई प्रशंसात्मक टिप्पणी करें तो वे तुरंत उसे देख लेने का प्रमाण सुलभ करा देते हैं।

हमने प्रारंभ में ही गिरिधर कविराय के हवाले से कहा है कि सोचना बहुत अच्छी बात है। बिना सोचे कुछ करना प्रायः नुकसानदेह होता है। लेकिन जैसा हमारे यहां कहा गया है, अति सर्वत्र वर्जयते। यह बात सोचने पर भी लागू होती है। अगर आप हर रोज़ तीन घंटे केवल सोचने में व्यतीत करेंगे तो इसकी स्वाभाविक परिणति यह होगी कि आप कम काम कर सकेंगे। यह तीन घंटे का समय निकलेगा तो आपके काम करने वाले समय में से ही।

इस रिपोर्ट की सबसे ज़्यादा उल्लेखनीय बात यह है कि बयालीस प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि जब वे अपने बॉस को कोई संदेश भेजते हैं और उसकी तरफ से उत्तर में केवल एक शब्द- 'ओके' मिलता है तो वे बहुत व्याकुल और चिंतित हो जाते हैं। उनका मन तमाम आशंकाओं से घिर जाता है। इससे वर्तमान स्थितियों में नौकरी करने वालों की मनोदशा को तो समझा ही जा सकता है, यह भी समझा जा सकता है कि आजकल नौकरियां कितनी असुरक्षित और तनाव देने वाली हो गई हैं।

अब आता है इस कथा का उत्तरार्द्ध। जब आप चिंतित होते हैं तो क्या करते हैं? आपका उत्तर होगा, किसी अपने से बात करके समस्या का हल तलाश करते हैं। लेकिन जान लीजिए कि ऐसा करना अब अतीत हो चुका है। यह रिपोर्ट हमें बताती है कि हम भारतीय अपनी ओवर थिंकिंग की आदत से निबटने के लिए एआई अर्थात कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करते हैं। मतलब, प्राकृतिक या स्वाभाविक बुद्धि की जगह अब कृत्रिम बुद्धि ने ले ली है। इस रिपोर्ट के अनुसार हर तीन में से एक भारतीय किसी रेस्तरां में अपना मनपसंद व्यंजन चुनने या किसी अपने को देने के लिए उपहार चुनने के लिए एआई का सहारा लेता है। इस रिपोर्ट की मानें तो बहुत बड़ी संख्या में हमारे देशवासी चैटजीपीटी और गूगल जैसे एआई प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करने लगे हैं।

हमने प्रारंभ में ही गिरिधर कविराय के हवाले से कहा है कि सोचना बहुत अच्छी बात है। बिना सोचे कुछ करना प्रायः नुकसानदेह होता है। लेकिन जैसा हमारे यहां कहा गया है, अति सर्वत्र वर्जयते। यह बात सोचने पर भी लागू होती है। अगर आप हर रोज़ तीन घंटे केवल सोचने में व्यतीत करेंगे तो इसकी स्वाभाविक परिणति यह होगी कि आप कम काम कर सकेंगे। यह तीन घंटे का समय निकलेगा तो आपके काम करने वाले समय में से ही। फिर, आप सोच क्या रहे हैं यह भी देखने की बात है। सोशल मीडिया पर क्या पोस्ट किया जाए, तस्वीर के लिए कौन-सा फिल्टर काम में लिया जाए, रेस्तरां में रोटी मंगवाई जाए या नान, स्विगी या ज़ोमैटो से चाइनीज़ खाना मंगवाया जाए या इटैलियन - अगर ऐसी बातों पर ही ओवर थिंकिंग करते रहेंगे तो आपकी उत्पादकता में कमी ही आएगी। जिस देश के नागरिक अपना जन प्रतिनिधि चुनने में कम और सोशल मीडिया पर लगाने वाली डीपी चुनने में ज़्यादा वक़्त लगाते हों, उस देश की अवनति को भला कौन रोक सकता है?

हमने पहले ही कहा, यह अध्ययन बहुत कम लोगों, मात्र 2100 पर किया गया है अत: इसे बहुत ज़्यादा प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। लेकिन इस अध्ययन की रिपोर्ट में जो बातें कही गई हैं और जिनकी चर्चा हमने यहां की हैं, वे निश्चय ही चिंतित करने वाली हैं और उनकी तरफ हम सबका ध्यान जाना चाहिए। एक स्वस्थ और विवेक सम्पन्न समाज हम सबका साझा सपना है, और इस सपने के यथार्थ में रूपांतरित होने में जो भी बाधाएं हैं उन्हें दूर करना हम सबका साझा कर्तव्य है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - संकल्प, प्रयास और चुनौतियां

अशोक कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy - NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव लाने का लक्ष्य रखती है। यह नीति दशकों बाद आई है और इसके पीछे कई महत्वपूर्ण संकल्प हैं, लेकिन इसे लागू करने में कई चुनौतियाँ भी हैं। आइए इन सभी पहलुओं को विस्तार से समझते हैं:–

संकल्प (Objectives and Vision)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल संकल्प भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है। इसके प्रमुख उद्देश्य और संकल्प निम्नलिखित हैं:

समठा और बहु-विषयक शिक्षा: इसका उद्देश्य बच्चों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उनके सर्वांगीण विकास पर जोर देना है। कला, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक शिक्षा के बीच की सीमाओं को खत्म करना इसका एक मुख्य लक्ष्य है।

रटने की बजाय समझने पर बल: नीति का लक्ष्य है कि शिक्षा को रटने की प्रणाली से हटाकर अनुभवात्मक और व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित बनाया जाए।

फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरेसी (FLN): 2025 तक सभी बच्चों को तीसरी कक्षा तक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

नई संरचना (5+3+3+4): शिक्षा के पुराने 10 2 ढांचे को 5+3+3+4 की नई संरचना में बदलना, जो बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास के अनुरूप है।

उच्च शिक्षा में GER बढ़ाना: 2035 तक उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrollment Ratio - GER) को 50% तक बढ़ाना।

मातृभाषा में शिक्षा: प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में हो, ताकि बच्चे बेहतर ढंग से सीख सकें।

तकनीकी एकीकरण: शिक्षा में प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग करना, जैसे कि डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग।

शिक्षकों का सशक्तिकरण: शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण और उनके पेशेवर विकास को बेहतर बनाना, ताकि वे नई शिक्षा प्रणाली के लिए तैयार हो सकें।

प्रयास (Efforts and Initiatives)

इन संकल्पों को पूरा करने के लिए सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं:–

निपुण भारत मिशन: बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य FLN लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (NCF):: स्कूल शिक्षा के लिए नई पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जा रही है, जो नई शिक्षा नीति के सिद्धांतों पर आधारित है।

बहु-प्रवेश-बहु-निकास प्रणाली: उच्च शिक्षा में छात्रों को अपनी सुविधानुसार किसी भी समय कोर्स में प्रवेश लेने और उसे छोड़ने की सुविधा दी गई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और कौशल विकास: कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नए कोर्स और कार्यक्रमों को शामिल किया जा रहा है।

डिजिटल अवसंरचना: ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जा रहा है, जैसे कि DIKSHA पोर्टल।

चुनौतियाँ (Challenges)

कार्यान्वयन की चुनौतियों, संसाधनों की कमी और कुछ नीतिगत फैसलों के संभावित परिणामों से संबंधित हैं।

मुख्य नकारात्मक पहलू और आलोचनाएं:-

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ: यह सबसे बड़ी चिंता है। नीति में कई महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, लेकिन उन्हें जमीनी स्तर पर कैसे लागू किया जाएगा, इसकी स्पष्ट और विस्तृत रूपरेखा का अभाव है। भारत जैसे विशाल और विविध देश में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में समान रूप से नीति को लागू करना एक बड़ी चुनौती है।

संसाधनों की कमी और वित्तीय चुनौतियाँ: NEP 2020 में शिक्षा पर जीडीपी का 6ञ खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। यह एक सराहनीय लक्ष्य है, लेकिन इसे प्राप्त करना काफी मुश्किल हो सकता है। पर्याप्त फंडिंग के बिना, डिजिटल बुनियादी ढांचे का विकास, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और अन्य आवश्यक बदलावों को लागू करना संभव नहीं होगा।

बुनियादी ढांचा: नई संरचना (5+3+3+4) को लागू करने के लिए स्कूलों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे, जैसे कि स्मार्ट क्लास, लैब और खेल के मैदान, की कमी एक बड़ी चुनौती है।

राज्यों के साथ समन्वय: शिक्षा एक समवर्ती विषय है, यानी केंद्र और राज्य दोनों का इस पर अधिकार है। नीति को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सभी राज्यों के साथ मजबूत समन्वय और सहयोग की आवश्यकता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण और तैयारी: नीति में शिक्षकों की भूमिका को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है और उनके लिए नए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। हालांकि, मौजूदा शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों और बहु-विषयक दृष्टिकोण के लिए प्रशिक्षित करना एक बड़ी चुनौती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

डिजिटल असमानता: नीति में डिजिटल शिक्षा पर बहुत जोर दिया गया है। यह उन छात्रों के लिए एक समस्या बन सकती है, जिनके पास इंटरनेट, कंप्यूटर या स्मार्टफोन जैसी बुनियादी डिजिटल सुविधाओं की कमी है। इससे गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए शिक्षा की असमानता और बढ़ सकती है।

मातृभाषा में शिक्षा का मुद्दा: नीति में कक्षा 5 तक, और संभव हो तो कक्षा 8 तक, मातृभाषा में शिक्षा देने का सुझाव है। हालांकि, यह उन छात्रों के लिए एक चुनौती बन सकता है जो बाद में उच्च शिक्षा या रोजगार के लिए ऐसे राज्यों में जाते हैं जहां दूसरी भाषाएं बोली जाती हैं।

निजीकरण का डर: कुछ आलोचकों का मानना है कि NEP 2020 शिक्षा के निजीकरण और व्यावसायीकरण को बढ़ावा दे सकती है। नई नीति के तहत निजी स्कूलों और कॉलेजों को प्रोत्साहन मिल सकता है, जिससे गरीब और वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच और भी मुश्किल हो सकती है।

बोर्ड परीक्षाओं का दबाव: नीति में बोर्ड परीक्षाओं को आसान बनाने और उन्हें साल में दो बार आयोजित करने का प्रस्ताव है, लेकिन कुछ आलोचकों को डर है कि इससे छात्रों पर परीक्षा का दबाव कम होने के बजाय बढ़ सकता है।

पाठ्यक्रम और शिक्षा की एकरूपता: कुछ आलोचकों को यह भी चिंता है कि देश भर में एक समान पाठ्यक्रम और मानकों को लागू करने से क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता को नजरअंदाज किया जा सकता है।

संक्षेप में, NEP 2020 में कई सकारात्मक पहलू हैं, लेकिन इसके सफल कार्यान्वयन के लिए संसाधनों, शिक्षकों के प्रशिक्षण और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

मानसून सीजन में भी पंजाब से बीकानेर कैनाल में नहीं मिल रहा तय हिस्से का पानी

श्रीगंगानगर, (निसं)। मानसून सीजन बीतने में अभी डेढ़ माह से अधिक का समय बाकी है। वहीं हिमाचल क्षेत्र में बारिश भी जमकर हो रही है। बांधों में भी पानी की आवक भरपूर है। इसके बावजूद बीकानेर कैनाल में पंजाब से तय हिस्से का पूरा पानी नहीं मिल पा रहा है। हालात इस कदर खराब है कि इस माह प्रदेश के पानी का हिस्सा 2500 क्यूसेक है, लेकिन राजस्थान बॉर्डर के खखां हैड पर सिर्फ 1628 क्यूसेक ही पानी मिल रहा है।

बीकानेर कैनाल में तय हिस्से का पूरा पानी न मिलने के कारण गंगनहर से जुड़ी वितरिकाओं में पानी का प्रवाह प्रभावित हो रहा है। इससे किसानों की सिंचाई बारियां भी पिट रही है। श्रीगंगानगर जिले में इस बार किसानों ने जुलाई में हुई अच्छी बारिश से खेतों में नमी के आधार पर बंपर बुवाई की है। किसानों को उम्मीद थी कि बारिश के सीजन व इसके बाद नहरों में भी पर्याप्त पानी मिलता रहेगा, लेकिन अब तय हिस्से का भी पूरा पानी नहीं मिल पा रहा है। गत 10 दिनों से जिलेभर में बारिश न होने के कारण तापमान फिर से बढ़ने लगा है। इन दिनों अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह रहा है। इससे फसलों में सिंचाई पानी की मांग भी बढ़ रही है।

नहरों में पूरा सिंचाई पानी नहीं मिलने के कारण किसानों में आक्रोश है। पंजाब में फिरोजपुर फीडर से निकलने वाली सरहिंद फीडर में तय क्षमता से अधिक 5700 क्यूसेक पानी प्रवाहित हो रहा है। वहीं, ईस्टन कैनाल में भी 2700 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा है। बीकानेर कैनाल में आरडी 45 से 2302 क्यूसेक पानी प्रवाहित करना दर्शाया जा रहा है जबकि राजस्थान बॉर्डर के खखां हैड पर सिर्फ 1628 क्यूसेक पानी ही मिल पा रहा है। पंजाब में हरिके के हुसैनीवाला की ओर 28000 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा है, वहीं हुसैनीवाला से नियमित रूप से 25000 क्यूसेक पानी पाकिस्तान की ओर छोड़ा जा रहा है।

- **हालात इस कदर खराब है कि इस माह प्रदेश के पानी का हिस्सा 2500 क्यूसेक है, लेकिन राजस्थान बॉर्डर के खखां हैड पर सिर्फ 1628 क्यूसेक ही पानी मिल रहा है**
- **किसानों को उम्मीद थी कि बारिश के सीजन व इसके बाद नहरों में भी पर्याप्त पानी मिलता रहेगा, लेकिन अब तय हिस्से का भी पूरा पानी नहीं मिल पा रहा है**

हरविंद्र सिंह गिल, प्रोजेक्ट चेयरमैन, गंगनहर श्रीगंगानगर का कहना है कि हरिके पर करीब 50 हजार क्यूसेक पानी की आवक हो रही है तथा यहां से फिरोजपुर फीडर में 8900 क्यूसेक, राजस्थान कैनाल में 13795 क्यूसेक, महू कैनाल में 212 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा है। मानसून सीजन में ही पंजाब सिंचाई विभाग के अधिकारी हमारे हिस्से का पूरा पानी बीकानेर कैनाल में नहीं दे रहे हैं। जबकि बांधों में पानी की बंपर आवक हो रही है। हमारे यहां किसान सिंचाई पानी के लिए तरस रहे हैं। यही स्थिति रही तो किसानों के पास आंदोलन के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

साढ़े तीन साल की अश्विका ने राम स्तुति सुनाने का विश्व रिकॉर्ड बनाया

अश्विका मात्र सिर्फ एक मिनट 32 सैकेंड में राम स्तुति सुना देती है

भीलवाड़ा, (निसं)। अगर मां बाप की अच्छी परवरिश और गुरु का साथ मिल जाए तो दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। ऐसा कीर्तिमान बनाया है साढ़े तीन साल की अश्विका माहेश्वरी ने। महज साढ़े तीन साल की अश्विका के नाम विश्व रिकॉर्ड दर्ज हुआ है, क्योंकि जिस उम्र के बच्चे क, ख, ग बोलने में सोचते है उस उम्र में अश्विका पूरी राम स्तुति सुना देती है वो भी सिर्फ एक मिनट 32 सैकेंड में। यह रिकॉर्ड उसके नाम पर है लेकिन इस कीर्तिमान के लिए जो मेहनत है वो उसके परिवार वालों और गुरु नवीन राव की है।

साढ़े तीन साल की अश्विका माहेश्वरी के नाम विश्व रिकॉर्ड दर्ज हुआ। (परिवार के साथ)

- **इस कीर्तिमान के लिए जो मेहनत है वो अश्विका के परिवार वालों और गुरु नवीन राव की है**
- **दादी ललिता सोडानी और बड़ी मां पिंकी के साथ मंत्रों का उच्चारण करती रही है अश्विका**

अश्विका के पापा अखिल सोडानी कहते हैं कि बेटी शुरुआत से ही होशियार है। चीजों को याद करने की क्षमता जबरदस्त है। हम भी पहले हैरान हो जाते थे, जब उसको वो सब बाते भी याद रह जाती थी, जो कई दिन पहले बोली गई हो। मां आंचल माहेश्वरी बताती है कि परिवार में आस्था का माहौल है। भगवान के मंत्र, स्तुतियां आदि रोजाना के पूजा-पाठ का हिस्सा है। करीब तीन साल की उम्र में अश्विका रुक-रुककर राम स्तुति बोल लिया करती थी। इसकी प्रतिभा को और निखारने के लिए गुरु की जरूरत थी। नवीन राव के रूप में हमें ऐसे गुरु मिले जो बच्ची को समझते भी थे और इसकी प्रतिभा को निखारने की कला भी जानते थे। बस यहीं से इसकी संगीत में तालीम शुरू हो गई। परिवार में धार्मिक माहौल और गुरु जी की शिक्षा का ऐसा असर हुआ कि अश्विका ने रिकॉर्ड बना लिया। इसकी संगीत की तालीम शुरू हुई थी जब यह पता नहीं था कि ये कीर्तिमान बना सकती है, लेकिन गुरु नवीन राव ने हमें भरोसा दिलाया।

बड़े पापा निखिल सोडानी ने बताया कि कि अश्विका कम उम्र से ही अपनी दादी ललिता सोडानी और बड़ी मां पिंकी माहेश्वरी के साथ साथ मंत्रों का उच्चारण करती रही है। अपनी नानी सत्यबाला मूंदड़ा के सहयोग से कई मंत्रों को कंठस्थ कर लिया। इस उपलब्धि का क्रेडिट अश्विका की माता आंचल माहेश्वरी को जाता है क्योंकि उनका धार्मिक आचरण और धार्मिक प्रवृति के कारण बचपन से अश्विका को धर्म और भजन कीर्तन में बहुत रुचि रही है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 11 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, शतभिषा नक्षत्र दिन 1:00 तक, अतिगंड योग रात्रि 9:34 तक, गर करण दिन 10:34 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा रात्रि 9:37 से आरम्भ होगी। बुध मार्गी दिन 1:00 पर होगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:38 तक, शुभ 9:16 से 10:54 तक, चर 2:10 से 3:48 तक, लाभ-अमृत 3:48 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:04

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में कष्ट हो सकता है।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

कन्या

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृश्चिक

घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन का भय समाप्त होगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

मीन

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।